भारतीय संगीत में वाद्यों के प्रकार

भारतीय संगीत में वाद्यों को बहुत महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। आदि काल से ही भारतीय संगीत में वाद्यों का प्रयोग होता आया है। अजंता, एलोरा तथा एलिफेंटा की चित्रकारी, मोहनजोदरों तथा हड़प्पा के अवशेष तथा रामायण, महाभारत तथा उपनिषदों आदि प्राचीन ग्रंथों में विभिन्न स्थानों पर अनेक वाद्यों का उल्लेख हुआ है। भगवान शंकर के हाथों में डमरु, नारद जी के हाथों में एकतारा तथा सरस्वती माँ सदैव वीणा वाद्य के साथ ही चित्रित किये गए है। शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त लोक संगीत तथा चित्रपट संगीत में भी कोई न कोई वाद्य यंत्र अवश्य रहते हैं। ग्रामीण रीति रिवाज़ों, मान्यताओं एवं संस्कारों में तो प्रत्येक शुभ कार्य में वाद्यों का प्रयोग किया जाता है। पूरा विश्व भी भारत में प्रचलित वाद्यों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका है।

प्राचीन शास्त्रों में नाद के पाँच भेद माने गए है :

1. नखज 2. वायुज 3. चर्मज 4. लोहज 5. शरीरज

अर्थात ध्वनि उत्पादक 5 तत्व होते हैं – ताार वाद्यों को नख की सहायता (नखज) से बजाया जाता है। बाँसुरी, शहनाई आदि वाद्यों को हवा, फूँक, वायु माध्यम (वायुज) से बजते है। ढोल, मृदंग आदि वाद्यों को चमड़े (चर्म) से बजाते है। मंजीरा, घंटी, चिमटा, करताल आदि वाद्यों में धातु आदि को आपस में टकराकर (लोहज) ध्वनि उत्पन्न की जाती है।

इनके अतिरिक्त मानव कण्ठ को प्राचीन शास्त्रों में नैसर्गिक (शरीरज) ध्वनि उत्पादक माना है। जिसके लिए ''गाज वीणा'' संज्ञा थी।

उक्त पाँच नाद भेदों में प्रथम चार भेद मानव निर्मित हैं।

ततं चैवावनद्धं च घनं सुषिर मेव च।
चतुर्विधं तु विज्ञेयमातोघं लक्षणाचितम्।।

–नाट्य शास्त्र

उक्त चारों भेदों को नाट्यशास्त्र में और अधिक स्पष्ट करते हुए लिखा गया है कि –

तर्त तन्त्रीकृतं ज्ञेयमवनद्धं तु पौष्करम्।
घनं तालुस्तु विज्ञेयः सुषिरो वंश उच्यते।।

– नाट्य शास्त्र

अर्थात तार वाद्य, पुष्कर (मृदंग आदि वाद्य) ताल वाद्य व बांसुरी आदि वाद्य उक्त श्रेणियों के अंतर्गत समाहित हैं।

तानसेन कृत संगीत सार में 'अवनद्ध' को 'वितत्' नाम दिया है। जो कि वर्तमान में तत् की ही एक

श्रेणी वितत है अवनद्ध श्रेणी नामकरण प्राचीन ही है।

तत को पहिले कहते हैं वितत दूसरो जान।
तीजो घन चौथो सिखार तानसेन परमान।।
तार लगे सब साज के, सो तत् ही तुम मान।
चरम चढ्यो जाको मुखर, वितत् सु कहे बखान।।
कंस ताल के आदि दै, घन जिय जानहु मीत।
तानसेन संगीत रस, बाजत सिखार पुनीत।।

–तानसेन कृत संगीत सार

जो भी हो प्राचीन काल से शास्त्रीय संगीत व लोक संगीत के समस्त वाद्यों को मुख्यतया चार भागों में ही वर्गीकृत करने की परम्परा है – तत्, अवनद्ध, सुषिर एवं घन वाद्य।

ऊपर वर्णित वाद्यों के चार प्रकार मानव निर्मित है। इनकी ढाँचागत निर्माण सामग्री प्रकृति प्रदत्त है, जैसे लकड़ी, हड्डी, बाँस, धातु, तुम्बी, चमड़ा आदि।

वादन कला का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि अभिव्यक्ति के लिए वाद्य संगीत को अन्य किसी कला की आवश्यकता नहीं है। बल्कि वादन कला– गायन, नृत्य तथा नाटक उक्त तीनों के प्रभावी प्रदर्शन हेतु अत्यावश्यक है। सामाजिक जीवन के अनेक अवसरों उत्सवों पर शुभ व सफलता स्वरुप वाद्य संगीत की ध्वनियाँ गुंजायमान की जाती है। मांगलिक कार्यो व विवाह के समय, शहनाई, नगाड़ा, बैण्ड–ढोल। पूजा आराधना में घण्टी, शंख, झांझ, घंटा, झालर आदि। रणभूमि में – धौंसा, दुन्दुभि, तुरही आदि।

वाद्यों की ऐतिहासिकता, विशिष्टता व महत्व इससे भी प्रमाणित होती है कि भगवान कृष्ण के हाथ में मुरली, ब्रह्मा के हाथ में करताल, गणेश के हाथ में मृदंग, शंकर के हाथ में डमरु व देवता स्वर व ताल हेतु विविध वाद्यों का वादन करते है।

ब्रह्मा का करताल, कृष्ण का मुरली रुप जो पाया है।
शिव का डमरु, वीणा पाणि माँ, सारी स्वर की माया है।।

भारतीय संगीत में अनेकानेक वाद्य प्रचलन में है। वाद्य किस प्रकार का है यह समझने के लिए सभी वाद्यों का वर्गीकरण किया गया था। ये वर्गीकरण वाद्यों के आकार, प्रकार तथा वाद्य पद्धति को ध्यान में रख कर किया गया था। भरत मुनि द्वारा लिखित भारतीय संगीत के आधार ग्रन्थ 'नाट्य शास्त्र' के अनुसार वाद्यों को 4 भागों में वर्गीकृत किया गया था।

1. तत वाद्य
2. अवनद्ध वाद्य
3. सुषिर वाद्य
4. घन वाद्य

तत वाद्य

वे वाद्य जिनमें तंत्री अथवा तार से ध्वनि उत्पन्न होती है, उन्हें तत वाद्य कहते हैं जैसे सितार, सरोद, तानपुरा, सारंगी, बेला (वायलिन) इत्यादि। वीणा को तत वाद्यों की जननी माना जाता है। इन सभी तत वाद्यों को 2 भागों में बाँटा जा सकता है – तत तथा वितत।

1. तत वाद्यों की श्रेणी में वे वाद्य आते है जिन्हें मिज़राब, कोण अथवा किसी वस्तु की टंकार देकर बजाते है जैसे वीणा, सितार सरोद, तानपुर आदि।
2. वितत वाद्य की श्रेणी में वे वाद्य आते है जिन्हें गज की सहायता से बजाया जाता है जैसे, बेला (वायलिन) इसराज आदि।

भारत रत्न पंडित रविशंकर जी सितार के, मोहन वीणा–पं. विश्वमोहन भट्ट, रुद्र वीणा– उ. असद अली खां, सरोद– उ. अमजद अली खां, सारंगी– पं. राम नारायण, वायलिन–पं. वी.जी.जोग विश्व प्रसिद्ध वादक हैं जिन्होंने तत् वाद्य के माध्यम से भारतीय संगीत का सम्पूर्ण विश्व में प्रचार किया।

अवनद्ध वाद्य

भारतीय वाद्यों में दूसरा वर्ग अवनद्ध वाद्यों का है। इन वाद्यों के मुँह पर चमड़ा मण्ढा हुआ रहता है। ये वाद्य भीतर से खोखले होते है। इन वाद्यों में चमड़े अथवा खाल पर आघात करने से ध्वनी उत्पन्न होती है जैसे तबला, पखावज, ढोलक, डमरु, नगाड़ा आदि। इनका प्रयोग ताल देने के लिए होता है। इन वाद्यों में एक ही स्वर निकलता है इसलिए इन वाद्यों में स्वर की अपेक्षा लय की प्रधानता रहती है। ये वाद्य मुख्यतः गायन और वादन की संगति के लिए प्रयोग किये जाते है। उस्ताद ज़ाकिर हुसैन तबला, पं. भवानी शंकर पखावज के विश्व प्रसिद्ध वादक हैं। जिन्होंने पूरे विश्व में इस वाद्य के माध्यम से भारतीय संगीत का प्रचार व प्रसार किया।

सुषिर वाद्य

जिन वाद्यों में स्वर की उत्पत्ति फूँक अथवा वायु (हवा) द्वारा होती है वे सुषिर वाद्य कहलाते है जैसे बाँसुरी, शहनाई, बीन, शंख, तुरई, बिगुल, हारमोनियम आदि। ये वाद्य स्वर वाद्यों की श्रेणी में आते है अर्थात इन वाद्यों में संगीत में प्रयुक्त सार स्वर सा रे ग म प ध नी निकाले जा सकते है। उ. बिस्मिल्लाह खां शहनाई के एवं पंडित हरिप्रसाद चौरसिया बांसुरी के विश्व प्रसिद्ध वादक हैं जिन्होंनें इन वाद्यों के माध्यम से भारतीय संगीत का प्रचार व प्रसार किया।

घन वाद्य

वाद्यों का अंतिम प्रकार घन वाद्य हैं। इन वाद्यों में धातु अथवा लकड़ी की चोट या आघात से स्वर की उत्पत्ति होती है जैसे जल तरंग, मंजीरा, झांझ, करताल, घंटा आदि। इन वाद्यों में कुछ वाद्य ताल वाद्य होते है तथा कुछ स्वर वाद्य होते हैं। खरताल, झांझ, मंजीरा आदि ताल वाद्यों के उदाहरण है तथा संतूर, जलतरंग आदि स्वर वाद्यों के उदाहरण है। पंडित विक्कू विनायक राम घट्म वाद्य के विश्व प्रसिद्ध वादक हैं जिन्होंने पूरे विश्व में इस वाद्य के माध्यम से भारतीय संगीत का प्रचार व प्रसार किया।

भारतीय संगीत के तत वाद्य

सरोद

सारंगी

तानपुरा

बेला(वायलिन)

सितार

इसराज

वीणा

भारतीय संगीत के अवनद्धवाद्य

तबला

मृदंग

पखावज

चेंडा

डमरु

नगाड़ा

भारतीय संगीत के सुषिरवाद्य

हारमोनियम

शहनाई

नाद स्वरम्

बाँसुरी

भारतीय संगीत के घनवाद्य

घटम्

जलतरंग

घुंघरू

करताल

महत्वपूर्ण बिन्दु :

1. प्राचीनकाल से वाद्यों के चार वर्ग प्रचलित हैं – तत्, अवनद्ध, सुषिर एवं घन।
2. तत् वाद्यों में तार, अवनद्ध वाद्यों में चमड़ा आदि से मण्ढ़ा होना, सुषिर वाद्यों में हवा या फूँक का प्रयोग तथा घन वाद्यों में परस्पर धातु आदि को टकराकर ध्वनि उत्पन्न की जाती है।
3. प्राचीन शास्त्रों में इनके समकक्ष नखज, चर्मज, वायुज लोहज आदि नाद की श्रेणियां है।
4. प्रायः समस्त वाद्य मानव निर्मित हैं तथा इनकी निर्माण सामग्री प्रकृति प्रदत्त होती है।
5. प्रभावी प्रदर्शन हेतु वादन कला स्वतंत्र है अन्य कलाओं पर आश्रित नहीं है।
6. भारतीय आध्यात्मिक परम्परा में ब्रह्मा, सरस्वती, कृष्ण, शंकर, गणेश आदि देव वाद्यों के अधिष्ठाता हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न

बहुवैकल्पिक प्रश्न –

1. वाद्यों को कितने वर्गो में बाँटा गया है?
   (अ) एक (ब) दो (स) तीन (द) चार
2. जिन वाद्यों को फूँक या हवा से बजाते हैं, कहलाते हैं?
   (अ) तत वाद्य (ब) अवनद्ध वाद्य (स) सुषिर वाद्य (द) घन वाद्य
3. भारत रत्न पं. रविशंकर किस वाद्य के लिए प्रसिद्ध हुए है?
   (अ) सरोद (ब) सितार (स) शहनाई (द) तबला
4. भगवान शंकर के हाथों में कौन सा वाद्य सुशोभित है?
   (अ) बाँसुरी (ब) करताल (स) वीणा (द) डमरु
5. चर्मज श्रेणी के वाद्य हैं?
   (अ) बाँसुरी, शहनाई (ब) वीणा, सितार (स) तबला, ढोलक (द) करताल, मंजीरा

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. सुषिर वाद्य किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाइये।
2. अवनद्ध वाद्यों की प्रकृति बताइये।
3. भारतीय परम्परा में किन्हीं 4 देवताओं के नाम वाद्य सहित लिखिए।
4. वाद्यों की चार श्रेणियों के दो–दो वाद्यों के नाम लिखिए।
5. तत् व वितत् के भेद को स्पष्ट कीजिए।

उत्तरमाला बहुवैकल्पिक प्रश्न

1. द 2. स 3. ब 4. द 5. स